पं. दीनदयाल उपाध्याय

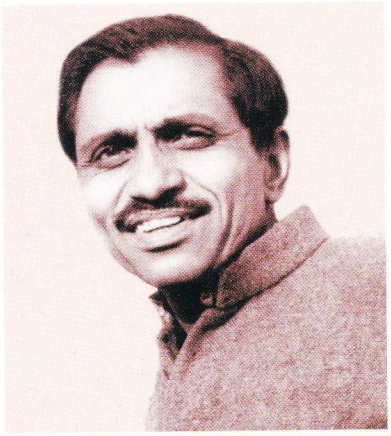

पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, 1916 ई. (तदनुसार आश्विन कृ. त्रयोदशी वि.सं. 1973) को उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद अंतर्गत नगला चंद्रभान नामक ग्राम में हुआ था।

विषम परिस्थितियों में दीनदयाल उपाध्याय ने जूनियर हाई स्कूल (अजमेर बोर्ड), इंटरमीडिएट (बिड़ला कॉलेज, पिलानी) और एम.ए. प्रथम वर्ष (सेंट जोंस कॉलेज, आगरा) की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पाकर उत्तीर्ण कीं। दुर्भाग्यवश अपनी बीमार बहन की सेवा में रहने के कारण एम.ए. (द्वितीय वर्ष) की परीक्षा नहीं दे सके। वे एक बार प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता में शामिल हुए और उनका चयन भी हो गया, किंतु उन्होंने विदेशी सरकार की नौकरी न करने का निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् उन्होंने बी.टी. का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

वे सनातन धर्म डिग्री कॉलेज, कानपुर में बी.ए. के छात्र थे, वहीं पर वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए और स्वयंसेवक बने। उन्होंने संघ के आजीवन व्रती प्रचारक बनकर राष्ट्रसेवा करने की शपथ ली। लखीमपुर जिले में 1942 में उन्होंने प्रचारक के रूप में जीवन-यात्रा का श्रीगणेश किया। सन् 1945 में वे उ.प्र. के सह-प्रांत प्रचारक बने।

भारतीय इतिहास के सांस्कृतिक गौरव को उजागर करते हुए उन्होंने अत्यल्प समय में 'सम्राट् चंद्रगुप्त' नामक उपन्यास की रचना की। 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास की प्रस्तुति भी विशिष्ट शैली में है। राष्ट्रवाद-संबंधी आपकी विपुल कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। 'भारतीय अर्थ-नीति—विकास की एक दिशा' उनके आर्थिक चिंतन का एक प्रसाद है। 'राष्ट्र चिंतन' तथा 'राष्ट्र जीवन की दिशा' राष्ट्र, समाज, राजनीति, धर्मनीति तथा संस्कृति पर समय-समय पर लिखे, उनके लेखों एवं भाषणों के संग्रह हैं।

11 फरवरी, 1968 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनका पार्थिव शरीर मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर पाया गया। उनकी हत्या की जाँच चली, परंतु हत्यारों का पता नहीं चला।